राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड
प्रेस नोट

देहरादून 21 मार्च, 2011

उत्तराखण्ड की राज्यपाल श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा ने आज **विश्व वानिकी दिवस** के अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी में भारतीय वन सेवा के परिवीक्षाधीन प्रशिक्षु अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें विकास व वन संरक्षण के बीच समन्वय स्थापित करते हुए अपने पद/सेवा से जुड़े दायित्वों से सम्बन्धित निर्णयों को पूर्ण परिपक्वता एवं गंभीरता से लेना होगा।

देश के विभिन्न प्रान्तों से आये वन सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों का आह्वाहन करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वन संरक्षण से सम्बन्धित नीतियों के क्रियान्वयन के समय इस बात का विशेष ध्याना रखा जाना आवश्यक होगा कि जन सामान्य के जीवन–यापन तथा सामान्य दैनिक गतिविधियॉ उससे दुष्प्रभावित न हों। सर्वोत्तम व व्यावहारिक यही होगा कि वन संरक्षण की नीतियों तथा उनके क्रियान्वयन में जन सामान्य की भूमिका तथा सहभागिता सुनिश्चित की जाये।

राज्यपाल ने जन सामान्य के समक्ष वन अधिनियमों के कारण आ रही अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए कहा कि वन भूमि के प्रबन्धन का दृष्टिकोण जन–केन्द्रित होना चाहिए ताकि पर्यावरणीय मूल्यों के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का भी उसमें संतुलित समावेश हो सके।

इस क्रम में राज्यपाल ने यह भी कहा कि देश के भावी वनाधिकारियों से यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे आदर्श वन प्रबन्धन के लिए पूर्व में स्थापित, **सफल जन–केन्द्रित दृष्टिकोण** को और अधिक सुदृढ़ करेंगे। मानव तथा भौतिक–परिस्थितिकी तंत्र के मध्य संतुलन तथा सामंजस्य स्थापित करने की रणनीति पर सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि देश में सामुदायिक वन प्रबन्धन के अनुभव यह स्पष्ट दर्शाते है कि वनों के संरक्षण में स्थानीय जन समुदाय का गहरा प्रभाव है। उन्होंने श्रेष्ठ वन प्रबन्धन के लिए स्थानीय समुदाय की संयुक्त व सक्रिय भागीदारी आवश्यक बतायी।

राज्यपाल ने देश के पश्चिमी घाट परिक्षेत्र तथा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में विकास की योजनाओं, वन्य जीव व मानव के बीच बढ़ते टकराव से स्थानीय समुदाय के हक–हकूकों आदि पर पड़ रहे विपरीत प्रभाव का विस्तृत उदाहरण देते हुए कहा कि इन व्यावहारिक समस्याओं का समाधान खोजे बिना वास्तविक वन सरंक्षण संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण तथा स्थानीय समुदाय के हितों को केन्द्र में रखकर ही विकास की योजनाएं बनाई जानी चाहिए।

विश्व वानिकी दिवस में निहित संदेश–**प्रोडक्शन, प्रोटेक्शन तथा रिक्रियेशन** को जन चेतना का आधार बताते हुए राज्यपाल ने कहा कि यह संदेश वर्ष 2011 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वन वर्ष घोषित किये जाने तथा उसकी विषय वस्तु **''जन के लिए वन''** के अनुरूप है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ राज्यपाल ने दीप प्रज्जवलित कर किया। अकादमी के निदेशक डा0 आर.डी. जगाती ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सचिव राज्यपाल श्री अशोक पई, प्रमुख वन संरक्षक उत्तराखण्ड डा0 आर.बी.एस. रावत सहित वन विकास पर अनेक वरिष्ठ अधिकारी, संकाय सदस्यों, परिसहाय श्री वी.के.कृष्ण कुमार सहित प्रथम व द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षु वन सेवा के अधिकारी उपस्थित थे।

————————0————————

सूचना अधिकारी श्री राज्यपाल, उत्तराखण्ड टेली0 फै0–0135–2756172 मो0न0:–9456590619